महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र

(भा.कृ.अनु.प. - कृषि तकनीकीअनुप्रयोगअनुसंधान संस्थान कानपुर)

चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर (उ०प्र०)-273165

समाचार – पत्रिका

अंक-04	अप्रैल, 2021

प्रो. उदय प्रताप सिंह

उपाध्यक्ष, प्रबन्ध समिति

गुरु गोरक्षनाथ सेवा संस्थान

गोरखनाथ, गोरखपुर

संदेश

वर्तमान समय में कृषि उत्पादन लागत को कम करने एवं गुणवत्तायुक्त अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु यह आवश्यक है कि कृषकों तक नवीनतम कृषि अनुसंधान एवं कृषि तकनीकियों को पहुँचाया जाए। महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, चौकमाफी, पीपगंज, गोरखपुर इन नवीनतम तकनीकियों को निरंतर कृषकों तक पहँचाने में तत्पर हैं जिससे कृषकों का आर्थिक एवं सामाजिक स्तर सुधारा जा सके।

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रकाशित मासिक न्यूज लैटर का यह अंक केन्द्र द्वारा किए गए एवं किए जाने वाले कार्यों के साथ-साथ नवीनतम कृषि तकनीकियों का प्रसार गांव-गांव एवं घर-घर पहुँचेगा, जो सभी वर्ग के किसानों के लिए लाभप्रद होगा।

(उदय प्रताप सिंह)

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र
एक नजर में

कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना कृषि एवं संबंधित विषयों की नवीनतम तकनीकों के स्थानांतरण एवं प्रसार द्वारा जनपद के सर्वांगीण विकास हेतु गुरु गोरक्षनाथ सेवा संस्थान के नियंत्रण में गोरक्षपीठाधीश्वर पूजनीय महंत श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज द्वारा की गई। इस केन्द्र का शिलान्यास 23 अक्टूबर 2016 एवं उद्घाटन 2 मार्च 2019 को तत्कालीन केंद्रीय मंत्री कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार श्री राधा मोहन सिंह जी के द्वारा किया गया। यह केंद्र भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कानपुर द्वारा वित्तपोषित है। यह केन्द्र गोरखनाथ की पवित्र धरती पर स्थापित होने की वजह से इस केंद्र का पूरा नाम महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र रखा गया। यह केन्द्र गोरखपुर जनपद से 35 किलोमीटर दूरी पर गोरखपुर – सोनौली मार्ग पर पीपीगंज रेलवे स्टेशन से 8 किलोमीटर दूरी पर (अक्षांश 26.929971, देशांतर 83.240244) पीपीगंज – बढ़या चौक मार्ग पर स्थित है। कृषि विज्ञान केन्द्र के पास 20.56 हेक्टेअर का प्रक्षेत्र है जिस पर प्रमुख रुप से गेहूँ, धान, सरसो, चना, तिल, गन्ना, अरहर इत्यादि फसलों का बीज उत्पादन किया जाता हैं।

महाययोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, गोरखपुर द्वारा अप्रैल, 2021 में किये गये कार्य

1. प्रशिक्षण कार्यक्रम

फसल/उद्यम का शीर्षक	प्रशिक्षण की सं.	लाभार्थी संख्या
क) कृषक एवं महिला कृषकों हेतु प्रशिक्षण	06	159
ख) प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम	01	15

2. अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

फसल/उद्यम का शीर्षक	क्षेत्रफल हे०/ सं०	लाभार्थी संख्या
क) मूँग (समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन प्रजाति-विराट)	10	25
ख) पोषण वाटिका	0.5	20

3. प्रक्षेत्र परीक्षण

शीर्षक	संख्या लाभार्थी
क) भैस में दुग्ध उत्पादन में बृद्धि में बाई पास प्रोटीन फीड का मुल्यांकन	05

4. प्रसार गतिविधियां

शीर्षक गतिविधियां	संख्या	लाभार्थी
क) वैज्ञानिकों का कृषक प्रक्षेत्र पर भ्रमण	31	47
ख) कृषकों का कृषि विज्ञान केन्द्र पर भ्रमण	48	54
ग) फोन पर सलाह	72	-
घ) समाचार पत्र प्रकाशन	09	सामूहिक
ङ) अन्य कार्यक्रम	04	42

समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन कार्यक्रम

❖ श्री अवनीश कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ – सस्य विज्ञान द्वारा समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत मूंग की फ़सल का 10.00 हे क्षेत्रफ़ल में 25 कृषको के प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन कराया गया जिसमे मूंग की उन्नतशील प्रजाति का बीज विराट कृषको के प्रक्षेत्र पर लगा हुआ है।

प्रक्षेत्र परीक्षण

❖ प्रक्षेत्र परीक्षण के अंतर्गत भैस के दुग्ध उत्पादन में बृद्धि हेतु बाई पास प्रोटीन फीड का मुल्यांकन 05 किसानो के 05 महिष वंशीय पशुओ पर किया जा रहा है।

प्रक्षेत्र भ्रमण

❖ डॉ. राहुल कुमार सिंह , प्रसार विशेषज्ञ द्वारा दिनांक 08-04-2021 को राखुखोर गाँव में रामनेवास मौर्या के प्रक्षेत्र पर चल रहे वर्मीकम्पोस्ट इकाई पर भ्रमण किया गया।

❖ डॉ. राहुल कुमार सिंह, प्रसार विशेषज्ञ द्वारा दिनांक 18-04-2021 को राखुखोर गाँव में सुभावती देवी के प्रक्षेत्र पर जीवामृत खाद पर चल रहे आन फार्म ट्रायल का भ्रमण किया गया।

❖ डॉ. विवेक प्रताप सिंह, पशुपालन विशेषज्ञ द्वारा दिनांक 13-04-2021 को नयागांव, अचियापार एवं मुस्तफाबाद में कृषक प्रक्षेत्र पर भ्रमण कर किसानो को तकनीकी सलाह दिया गया।

कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम

❖ डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव, उद्यान विशेषज्ञ, डॉ. राहुल कुमार सिंह प्रसार विशेषज्ञ एवं श्री संदीप प्रकाश उपाध्याय मृदा विज्ञान विशेषज्ञ द्वारा दिनांक- 12/04/2021 को किसानो को सब्जी फसलो में प्लास्टिक मल्चिंग विषय पर केंद्र पर प्रशिक्षण दिया गया। इसी के साथ ही साथ कृषक उत्पादन सगठन एवं मृदा जाच आदि पर आवशयक जानकारी दी गयी।

❖ डॉ. विवेक प्रताप सिंह, पशुपालन विशेषज्ञ द्वारा दिनांक 13-04-2021 को पाली, क्षेत्र के अचियापार में पशुओ के लिये संतुलित आहार प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमे केंद्र के पशुपालन विशेषज्ञ द्वारा पशुओ के लिये संतुलित आहार तैयार करने के बारे में कृषको को जानकारी दी गयी। डॉ राहुल कुमार सिंह, कृषि प्रसार विशेषज्ञ एवं श्री अवनीश कुमार सिंह, सस्य विज्ञान विशेषज्ञ द्वारा कृषको को समसामयिक जानकारी दिया गया।	
❖ डॉ. राहुल कुमार सिंह, प्रसार विशेषज्ञ द्वारा दिनांक 19-04-2021 को अंतःपरिसर में "प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के प्रति जागरूकता" विषय पर एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 22 किसानों ने प्रतिभाग किया।	
❖ श्री अवनीश कुमार सिंह, सस्य विज्ञान विशेषज्ञ द्वारा दिनांक-20.04.2021 को ग्राम- बौन्दरा ब्लाक- पली में समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन दलहन योजनान्तर्गत, एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का आयोजन "आय संवर्धन एवं मृदा स्वास्थ्य हेतु ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती" विषय पर किया गया जिसमे केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, डॉ संदीप कुमार सिंह; विषय वस्तु विशेषज्ञ- कृषि प्रसार, डॉ राहुल कुमार सिंह एवं विषय वस्तु विशेषज्ञ-पशुपालन, डॉ विवेक प्रताप सिंह ने प्रतिभाग किया और कृषको को समसामयिक खेती के बारे में जानकारी दिया गया। प्रशिक्षण के अंत में चयनिक कृषको को मूंग की उच्चउत्पादक प्रजाति विराट का बीज प्रदर्शन हेतु वितरित किया गया।	

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा नवनिर्मित फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी

क्र.सं.	फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी का नाम	सी.आई.एन.	सम्बंधित वैज्ञानिक
1	गौरैया फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड (आलमचक, कैम्पियरगंज)	U01100UP2021PTC140280	डॉ. राहुल कुमार सिंह, वि.व.वि.-कृषि प्रसार
2	राप्ती फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड (आलमचक, कैम्पियरगंज)	U01100UP2021PTC141985	डॉ. राहुल कुमार सिंह, वि.व.वि.-कृषि प्रसार
3	सनातन फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड (आलमचक, कैम्पियरगंज)	U01110UP2021PTC143986	डॉ. राहुल कुमार सिंह, वि.व.वि.-कृषि प्रसार

गुड़ प्रसंस्करण इकाई द्वारा निर्मित गुड़

कृषि विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, डॉ संदीप कुमार सिंह एवं विषय वस्तु विशेषज्ञ- सस्य विज्ञान, द्वारा दिनांक-01-04 अप्रैल 2021 को गुड प्रसंस्करण इकाई के प्रदर्शन हेतु इकाई को चलाया गया जिसमे 463 किलोग्राम गुड निर्माण किया।

मई माह के मुख्य खेती-बाड़ी के कार्य

फसलोत्पादन एवं प्रबंधन

धान :-

- धान की नर्सरी लगाने हेतु खेत की तैयारी करें। धान की देर से पकने वाली प्रजातियों की नर्सरी माह के अन्तिम सप्ताह से डाली जा सकती है। बीज को कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्लू.पी. की 3 ग्राम मात्रा से प्रति किलो बीज उपचारित करें। इसके बाद पी.सी.बी. की 5 ग्राम तथा एजोटोबैक्टर कल्चर की 5 ग्राम मात्रा से प्रति किलो बीज से उपचारित करके बोयें। खासतौर पर देर व मध्यम अवधि वाली किस्मों को बोएं।
- ग्रीष्मकालीन मूंग व उड़द फसलों में निराई, गुड़ाई कार्य करें एवं समय – समय पर सिंचाई करते रहें।

मृदा विज्ञान

- हरी खाद के लिए ढैंचा या सनई की बोआई भूमि की उर्वरता बढ़ाने के लिए बहुत ही उपयोगी है। हरी खाद की फसलें 45-50 दिन में पलटने योग्य हो जाती हैं। अतः रोपाई के समय को ध्यान में रखते हुए बोआई करें।
- भूमि में पोषक तत्वों की कमी जानने के लिए मृदा परीक्षण करवा ले। भूमि का समतीलीकरण कर लें, जिससे सिचाई के समय पानी पूरे खेत में एक समान फैले।
- रबी की फसल की कटाई के बाद मिटटी पलटने वाले हल से गर्मी की जुताई करना लाभदायक होगा। गर्मी की जुताई से खरपतवार की संख्या में कमी होती है, साथ ही हानिकारक कीड़े भी नष्ट हो जाते हैं और भूमि की पानी सोखने व रोकने की क्षमता भी बढ़ जाती है।

मौनपालन

- उचित प्रक्षेत्र का चयन कर ,मौनवंशों का समय से माईग्रेशन करें
- मौनगृह के तलपट पर सम्बंधित उपकरणों को पोटैशियम परमैगनेट/ लाल दवा से एक बार धुलाई करें
- माइट के प्रकोप से बचने के लिए मौनगृह के तलपट की समय-समय पर सफाई करते रहें

- अत्यधिक पुराने एवं काले पड़ चुके छत्तों को नष्ट कर दें तथा उनकी प्रतिपूर्ति मोमी छात्ताधर लगाकर नए छत्तों का निर्माण कराकर कर लिया जाए ताकि मौनवंशों की गुणवत्ता प्रभावित न हो
- गतवर्ष की अधिक शहद उत्पादन करने वाले सशक्त मौनवंशों को मात्र मौनवंश की श्रेणी में रखते हुए इनसे मौनवंशों का संवर्धन सुनिश्चित किया जाए

पशुपालन

- पशुओ के मुँह में छाले पड़ने पर सुहागा के चूर्ण को पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए या फिर पोटाश को ठंडे पानी में मिलाकर मुँह की सफाई करनी चाहिए। ग्लिसरीन और बोरिक ऐसिड का पेस्ट बनाकर जीभ के उपर छालों पर लगानी चाहिए। मुँह को खोल कर मुँह के अंदर तथा जीभ पर मक्खन लगाने से आराम महसूस होता है। उपर लिखे सारे उपचार को दिन में तीन से चार बार परिस्थिति के अनुरूप दोहराते रहना चाहिए।
- थन कटना: थन कटने पर सबसे पहले उसे साफ़ पानी से धोकर उसके उपर एंटीसेप्टिक क्रीम का उपयोग करना चाहिए। अगर क्रीम नहीं हो तो पोटाश के पानी से धोकर फिटकिरी पीस कर लगाना चाहिए। दूध दोहने के पहले थन को पानी से धोना चाहिए और दोहने के उपरान्त नारियल तेल या सरसों तेल लगाना चाहिए।
- अन्तः एवं बाह्य परजीवी का बचाव करने के लिए पशुओं को पानी में दवा मिलाकर नहलाएं और दवा पिलाएं।
- गलाघोंटू तथा लंगड़िया बुखार का टीका सभी पशुओं में लगवायें।
- पशुओं को हरा चारा पर्याप्त मात्रा में खिलायें।
- पशु को स्वच्छ पानी पिलायें तथा पशु को सुबह एवं शाम नहलायें।
- पशु को लू एवं गर्मी से बचाने की व्यवस्था करें।
- परजीवी से बचाव के लिए पशुओं का उपचार करायें।

सब्जी उत्पादन

- भिन्डी / बैगन को फली बेधक सुंडी से बचाए।
- लहसुन की फसल में खुदाई के 10-12 दिन पूर्व सिचाई बंद कर दे।
- अदरक व् हल्दी में खेत की तैयारी के समय प्रति हेक्टेयर 200-250 कुंतल गोबर की खाद या 75 कुंतल नाडेप कम्पोस्ट प्रयोग करना चाहिये।
- प्रति हेक्टेअर अदरक की 18-20 कुंतल व् हल्दी की 15 -20 कुंतल बीज की आवशयकता होती है।

फलोत्पादन

- आम फलों को गिरने से रोकने के लिए नेप्थालिन एसिटिक एसिड (20 पी.पी. एम.) 2 ग्राम प्रति 100 ली. पानी में मिलाकर छिडकाव करना चाहिए।
- यदि नीबू में फल फटने की समस्या हो तो पोटैशियम सल्फेट के 4 प्रतिशत घोल का छिडकाव करे।
- नींबू में समय पर सिचाई करते रहे।
- गुम्मा व्याधि ग्रसित बौर को हटा देना चाहिए।
- यदि बाग ईट के भट्टे के पास हो तो निदान हेतु बोरेक्स (1%) का छिडकाव करे।
- आम में भुंनगा कीट से बचाव हेतु मोनोक्रोटोफास (1.0 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में) घोलकर छिड़काव करे।
- लीची के बागो की आवश्यकतानुसार सिचाई करते रहे।

- लीची में फ्रूट बोरर की रोकथाम हेतु डाईक्लोरोवास आधा मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करे।
- लीची को फटने से बचाने हेतु भूमि में सिचाई कर पर्याप्त नमी बनाये रखे। फल विगलन रोग के रोकथाम के लिए फलों के पकने से 20-25 दिन पूर्व कार्बेन्डाजिम 50% WP 2.0 प्रतिशत (दो ग्राम दवा / लीटर पानी) का छिडकाव करे।

फूलो की खेती

- गर्मी वाले मौसमी फूलो जैसे पोर्चुलाका, जीनिया, सुन्फ्लोवर, कोचिया, नारंगी, गोमफ्रिना आदि के पौधों की आवशयकतानुसार सिचाई करें।
- गुलाब में आवश्यकता अनुसार सिचाई एवं गुड़ाई करे।

सहयोग			
नाम	**पदनाम**	**विषय**	**मो0न0**
श्री आशीष कुमार सिंह	प्रक्षेत्र प्रबंधक	अनुवाशिकी एवं पादप प्रजनन	**07752941868**
श्री जितेन्द्र कुमार सिहं	कार्यक्रम सहायक (लैब टेक्निशियन)	पौध संरक्षण	**08887725608**
श्री शुभम पाण्डेय	सहायक	-	**08317019891**

सह-सम्पादक मंडल			
डा0 विवेक प्रताप सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	पशुपालन	**07651922058**
डा0 अजीत कुमार श्रीवास्तव	विषय वस्तु विशेषज्ञ	उद्यान	**08787264166**
डा0 राहुल कुमार सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	कृषि प्रसार	**07007275688**
श्री अवनीश कुमार सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	सस्य विज्ञान	**09792099943**
श्री संदीप प्रकाश उपाध्याय	विषय वस्तु विशेषज्ञ	मृदा विज्ञान	**09621437547**
श्रीमती श्वेता सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	गृह विज्ञान	**09453158193**

संकलन एवं सहयोग			
नाम	**पदनाम**	**विषय**	**मो0न0**
श्री गौरव कुमार सिंह	कार्यक्रम सहायक (कम्प्यूटर)	कम्प्यूटर	**07651922058**

सम्पादक
डा0 संदीप कुमार सिंह
(वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष)
महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र,चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर(उ०प्र०)
Mob no. 09453721026; Email – gorakhpurkvk2@gmail.com
website -http://www.mgkvk.in/